सब एक... तो सबके पिता भी एक!

"परंपरागत मान्यता यही कहती है कि सभी आज शरीर के धर्म जितने भी बने चाहे वह हिन्दु धर्म है, मुस्लिम धर्म है, सिक्ख धर्म है या ईसाई धर्म या अन्य कोई भी धर्म है, सबमें, सबके धर्म पिताओं ने कभी शारीरिक आधार पर न धर्म को बांटा और न ही परमात्मा को बांटा। लेकिन धर्म पिताओं की भावना और उनके विचार को न देख लोगों ने उसको अपना पिता बनाया, इष्ट बनाया। बस यहाँ से ही अलगाव शुरु हुआ। लेकिन धर्म पिताओं ने तो परमात्मा को एक ही माना!"

अगर परमात्मा को समझना है इन धर्मपिताओं की नज़रों से तो आप को सबसे पहले तपस्या करनी पड़ेगी, साइलेंस का अभ्यास करना पड़ेगा, एकांतवासी बनना पड़ेगा, तब तो निराकार ज्योतिर्बिन्दु समझ में आयेगा।

आज चाहे कितने भी धर्मपिता हैं, चाहे गुरु नानक जी हैं, ईसा मसीह हैं, चाहे महात्मा बुद्ध हैं, महावीर जैन, सभी ने परमात्मा की खोज में अपना एक बहुत

बड़ा जीवन दिया। लम्बे काल तक तपस्या की, तो थोड़ा बहुत परमात्मा को समझ पाये। और हम बिना जाने, समझे विरोध कर रहे हैं कि परमात्मा नहीं है। इन सभी ने परमात्मा को निराकार ही माना, ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप ही माना भले नाम अलग-अलग दिये। इसलिए पहले तप करो फिर तर्क करो। और ये हम विश्वास दिलाते हैं कि तप के बाद तर्क की कोई जगह बचेगी ही नहीं। फिर आप परमात्मा को निराकार ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप ही मानेंगे।

भारत के हर कोने में शिव

पूर्व दिशा में जायेंगे तो सोमनाथ मिलता है अर्थात् सोमरस, अमृत देने वाला नाथ। उत्तर में - 'अमरनाथ' के रूप में उनकी पूजा होती है अर्थात् जो अमर आत्माओं का नाथ है। दक्षिण में - श्रीराम ने शिव की पूजा की जिनकी आज 'रामेश्वरम' के रूप में पूजा होती है। इसी तरह दिखाते हैं कि कुरुक्षेत्र के मैदान में महाभारत युद्ध के पहले स्वयं श्रीकृष्ण ने भी 'थानेश्वर सर्वेश्वर' की स्थापना कर उनकी पूजा की थी।

पाँचों खंडों में निराकार की यादगार

भारत के अलावा जापान में जायेंगे तो जो शिकोनिज़म् सेक्ट वाले हैं वे एक पत्थर, जिसे 'करनी का पवित्र पत्थर' कहते, उसका ध्यान लगाते हैं। जिसका नाम दिया है - 'चिंकोनशेकी।' जीसस ने भी कहा - 'गॉड इज़ लाइट, आई एम द सन ऑफ गॉड'। सिक्ख धर्म में भी देखें तो गुरुनानक देव ने भी यही कहा कि 'एकोंकार निराकार'। मुस्लिम धर्म में परमात्मा को 'नूर-ए-इलाही' कहा गया है। 'नूर-ए-इलाही' अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम कहा, ज्योतिस्वरूप कहा।

पारसियों के अग्यारी में जायेंगे तो वहाँ पर 'होली फायर' मिलता है। रोम में शिवलिंग को 'प्रियपस' कहते थे। चीन में शिवलिंग को 'हुवेड-हिफुह' कहा जाता था और इसी नाम से इसकी पूजा होती थी। बेबीलोन में शिवलिंग को 'शिउन' कहा जाता था। मिस्र में 'सेवा' और फिजी में 'सेवा' या 'सेवाजिया' नाम से पूजते हैं।

फ्रांस के गिरजाघरों में तथा अजायबघरों में लिंग रूप के पत्थर आज भी स्मारक रूप में देखे जाते हैं। यूनान में शिवलिंग का नाम 'फल्लुस' प्रचलित रहा है। स्याम-थाइलैंड में भी 'एकोनिस' और 'ऐस्टरगेरीस' नाम से शिवलिंग पूजे जाते रहे हैं। यहूदियों के यहाँ शिवलिंग को 'बेलफेगो' कहते हैं।

सुख-शांति-समृद्धि का त्योहार शिवरात्रि

परमपिता परमात्मा जब इस धरा पर आते तो वो खाली हाथ नहीं आते, हम बच्चों के लिए गिफ्ट लेकर आते हैं। जिससे हमें सभी दुःख, दर्द व मुश्किलातों से मुक्त कर देते हैं।

जिसकी रचना इतनी सुंदर वो कितना सुंदर होगा! इसकी गहराई को समझते हैं तो मुंह में पानी आ जाता। सत्यम् शिवम् सुंदरम्, सबका मालिक एक, एकोंकार निराकार, गॉड इज़ लाइट। हम इसे और समझते हैं तो बुद्धि वहाँ जाकर रुकती है... सदा शिव। शिव माना ही सर्व के कल्याणकारी। कह तो देते हैं... कल्याणकारी। लेकिन कल्याणकारी माना क्या? यही ना कि हमारा जीवन सुख, शांति, समृद्धि, शक्ति और खुशियों से सम्पन्न हो! बड़े चाव से, बड़े भाव से, हृदय की गहराई से हमेशा हर कोई एक गीत गुनगुनाता है... 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्... ईश्वर सत्य है, सत्य ही शिव है, शिव ही सुंदर है।' इसपर हम सबको निश्चय भी है कि वो कभी किसी का अकल्याण कर ही नहीं सकता क्योंकि वो सत्य है। परंतु आज मनुष्य की जो मनोस्थिति है, उसके दुःख-दर्द हैं, तकलीफे हैं, परेशानियाँ हैं, तो इसका कारण व्यक्ति अंदर-बाहर से सत्य नहीं है। क्योंकि जहाँ सत्यता है वहीं सुख है, शांति है, पवित्रता है। गज़ब की बात तो यह है कि सभी दावा करते हैं कि हम तो सत्य बोलते हैं, हमेशा सत्य सोचते हैं। अगर आप सच बोलते हैं, सत्य सोचते हैं तो आप परेशान क्यों हैं? अशांत क्यों हैं? इसका सीधा-सा अर्थ है कि हम सत्य शब्दों से हो सकते हैं, बातों से हो सकते हैं लेकिन हमारा खुद का भाव, अंदर का व्यक्तित्व, अंदर की मंसा सबकुछ सत्य नहीं भी हो सकती है। परमात्मा

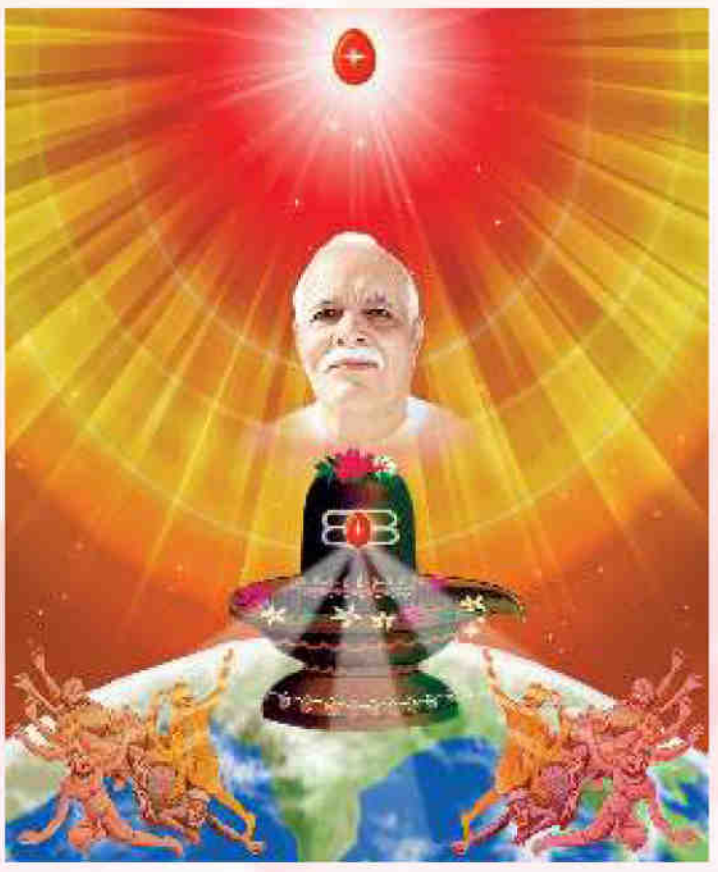

के ज्ञान में सिर्फ और सिर्फ एक ही चीज़ का सार है, वो है सत्य! ज्ञान की गहराई को समझें तो आत्मा अपने आप में सच्चिदानंद स्वरूप है, इसलिए उसकी बुद्धि में भी स्पष्टता है। और जबकि जिसकी बुद्धि मलिन है, अस्थिर है, अशांत है, वो सत्य हो ही नहीं सकता। इस ज्ञान में ज़रूरत है सरल और सत्य होने की। परमात्मा को सत्यता और पवित्रता ही प्रिय है। हम पावन न रहे तब तो परमात्मा से दूर हुए, दुःखी व अशांत हुए। तभी तो सभी कहते हैं झूठी माया, झूठी काया, झूठा सब संसार...। ऐसी झूठी माया वाले कहाँ आपको सत्य सुनायेंगे! सब लोग अपने तर्क के आधार से बात कह रहे हैं लेकिन सत्य तो सत्य ही है। क्योंकि जो बातें हम सुनते हैं उन बातों से हमारा कोई लिंक नहीं होता। तो इसका अर्थ ये हुआ है कि वो बातें सिर्फ और सिर्फ थोड़ी देर के लिए है, असत्य है, झूठी है, इस दुनिया के हिसाब से है। ऐसे असमंजस के मध्य शिवरात्रि त्योहार परमात्मा के अवतरण का यादगार है। जब वे अवतरित होते हैं तो सत्यता के साथ सुख, शांति, पवित्रता और समृद्धि की सौगात हम बच्चों के लिए ले आते हैं। आप भी उसे जानें और ये वर्सा प्राप्त करें।

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

स्थानीय सेवाकेन्द्र

प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्व विद्यालय